भारतीय फोटोग्राफर के अमेरिकी अनुभव

दीपांजली काकाती

दूसरी निगाह में अक्सर नई बात दिखती है, और जब कला एक महानगरीय भूदृश्य को चित्रित कर रही हो तब तो यह एकदम ही सच होता है। जुलाई से दिसंबर 2005 तक फुलब्राइट वृत्ति पर अमेरिका में रहे संदीप बाली ने वहां खींची तस्वीरों को जब भारत में देखना शुरू किया तो ऐसा ही हुआ।

फोटोग्राफी और वीडियो के कलाकार संदीप बाली की विशेषज्ञता संग्रहालयों में प्रदर्शनी की व्यवस्था के क्षेत्र में है। उन्होंने वाशिंगटन,डी.सी. में नेशनल गैलरी ऑफ आर्ट और फ्रीयर और सैकलर गैलरियों में ललितकलाओं और संस्कृति के लिए इस्तेमाल किए जाने वाली संप्रेषण और व्याख्यात्मक विधियों और संसाधनों पर शोध किया।

अमेरिका की यात्रा ने उन्हें साधारण दृश्यों में असाधारण क्षणों को दर्ज करने का अवसर दिया- उन्होंने करीब 400 फोटोग्राफ खींचे और 6 घंटे की वीडियो फुटेज तैयार की। मई में उन्होंने इनमें से 19 फोटो और दो वीडियो इंस्टॉलेशन नई दिल्ली के इंडिया हैबिटैट सैंटर में 'मेड इन यू.एस.ए.: एन अमेरिकन एक्सपीरियंस' नामक प्रदर्शनी में प्रस्तुत किए।

''मैं यहां पर दिखाने के लिए उन चीजों को दर्ज कर रहा था जिन्होंने मुझे चकित किया। लेकिन यहां लौटकर मैंने उन्हें एक अलग ही निगाह से देखा। मुझे लगा कि उनका एक खास दृष्टिकोण है, वह अमेरिका की ढेरों रूढ़ छवियों के साथ अमेरिका आए व्यक्ति की निगाह से चीजों को देखती हैं। इनमें से ज्यादातर शुरू के ही दिनों में खींची गई थीं,'' संदीप बताते हैं। इस नई निगाह के विकसित होने में कुछ योगदान उनकी मकान मालकिन मार्था स्मिथ का भी रहा। मार्था फ्रीयर और सैकलर गैलरियों के साथ काम करती हैं। फुलब्राइट वृत्ति से मिले पैसों से अमेरिका की सैर करने की शर्त पर उन्होंने संदीप को मुफ्त में अपने घर टिका लिया।

अमेरिकी स्वतंत्रता दिवस 4 जुलाई अमेरिका में संदीप का पहला दिन- प्रदर्शनी के पहले चित्र का नाम है ''द बिगिनिंग ऑफ इट ऑल....जुलाई 4।'' यह वाशिंगटन की बस्ती द पैलिसेड्स में 4 जुलाई की परेड देखते एक वयोवृद्ध युगल का चित्र है, संदीप कहते हैं,'' कई लोग मुझसे कहते हैं- यह तो एक वृद्ध जोड़ी है, तुम इसे 'शुरूआत' कहते हो ?' लेकिन यह अमेरिका में मेरे खींचे शुरूआती चित्रों में से एक है; मेरे अमेरिकी अनुभव की शुरूआत। चार जुलाई अमेरिका की शुरूआत का भी प्रतीक है''। परेड में दिख रही बहुरंगी संस्कृति की झलक और उसे देखने के लिए जुटे परिवारों ने उन्हें भारत में गणतंत्र दिवस परेड की याद दिला दी।

तमाम सैलानियों की तरह वह भी नियाग्रा प्रपात जैसी 'देखने लायक जगहें' देखने गए लेकिन उन्हें प्रभावित किया न्यूयॉर्क की ऊर्जा ने। वहां की एम्पायर स्टेट बिल्डिंग उन्हें बहुत रोचक लगी, वह कहते हैं,'' वर्ल्ड ट्रेड सेंटर बनने से पहले तक यह न्यूयॉर्क की सबसे ऊँची इमारत थी, वहां की पहचान, 9/11 के बाद यह फिर न्यूयॉर्क की पहचान बन गई है।''

एम्पायर स्टेट

फोटोग्राफ: संदीप बाली

हुर्रे: 4 जुलाई

संदीप के चित्र अमेरिका की महानगरीय प्रकृति को पकड़ने का प्रयास करते हैं। वह बताते हैं,'' अमेरिका में उपलब्ध बहुत-सी चीजें दरअसल दूसरे देशों में बनती हैं।'' संसार के विभिन्न हिस्सों के यूं अमेरिका में आ मिलने के विचार ने उन्हें छू लिया, इसी से उन्हें अपनी प्रदर्शनी का नाम भी मिला। अपनी अमेरिका यात्रा से उन्हें एक नया दृष्टिकोण मिला है, वह कहते हैं,'' हमें खुले दिलदिमाग से घूमना चाहिए। लोग तो सभी जगह एक जैसे ही हैं।'' □